Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 01-06-2024, Accepted: 19-06-2024, Published: 20-07-2024
Volume 5, Issue 1, 2024, Page No. 1-2

हरियाणवी लोकवाद्यों का सांस्कृतिक मूल्यांकन

महासिंह पूनिया
हिन्दी विभागाध्यक्ष, आई.आई.एच.एस., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

सारांश
लोक वाद्य से अभिप्राय लोकजीवन में बजाए जाने वाले वाद्य हैं। हरियाणवी लोकजीवन में पारम्परिक लोक वाद्यों का शुरू से ही प्रयोग होता रहा है। यहां के लोग रागनी गायन के लिए माचिश का उपयोग वाद्य के रूप में करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त बालों के लिए प्रयोग किए जाने वाले कंघे को बजाने की परम्परा भी लोकजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। गांवों में बच्चों द्वारा आम की गुठली को घिसाकर पपीहा बनाने की परम्परा, गेहूं की नालियों को छेदकर उससे पिपनी बनाने की परम्परा, दो ठेगरों के बीच में पत्ता देकर उसे बजाने की परम्परा आज अतीत का हिस्सा बन कर रह गई है। रागनी में घड़वे का प्रयोग आज भी यहां के साजिन्दे करते हैं। हरियाणा में अनेक प्रकार के लोक वाद्यों का प्रयोग लोकजीवन में किया जाता है। गांवों में महिलाओं द्वारा नृत्य करते समय तालियों के माध्यम से ही वा हैं। गूगा के गीतों एवं मदारी द्वारा ड़मरू अथवा डुगडुगी का प्रयोग किया जाता है। डेरू लोक परम्परागत वाद्य है। इसका प्रयोग जोगी एवं गूगा के गायन में करते हैं। डफ आर्यों का प्राचीन वाद्य है। इसका प्रयोग होली गीतों एवं नृत्यों में किया जाता है। डफ़ली डफ़ का छोटा स्वरूप होता है। नृत्य के लिए सपेरे इस वाद्य यंत्र का प्रयोग करते हैं। खंजरी एक ऐसा लोक वाद्य है जिसमें झांझे लगी हुई होती हैं। व्यैक्तिक गायन एवं सामुहिक गायन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। खड़ताल एक प्राचीन वाद्य है इसको करताल के नाम से भी जाना जाता है, जो लोक नाटकों एवं भजन–कीर्तनों में भी प्रयोग किया जाता है। घड़ा देसी लोक वाद्य है। इसका प्रयोग रागनियों, बीन एवं बांसूरी की स्वर लहरियों के साथ–साथ भजन–कीर्तन व लोक गायन शैलियों में किया जाता है। चिमटा वाद्य यंत्र कीर्तन एवं लोक सांस्कृतिक परिस्थितियों में प्रयोग किया जाने वाला वाद्य है। मंजीरा एक लोक प्रचलित वाद्य है जिसका प्रयोग लोक संगीत तथा भक्ति संगीत में किया जाता है। घूंघरू छोटे एवं बड़े आकार के वाद्य होते हैं। पशुओं के गले में भी मनोरंजन के लिए घूंघरू बांधे जाते हैं। लोक नृत्य में भी नृत्यकार घूंघरूओं का प्रयोग करते हैं। इकतारा प्राचीन लोक वाद्य है। यह एक तंत्री वीणा के समान है। इस वाद्य को भक्तजन भक्ति गीत एवं संगीत में ही प्रयोग करते हैं। सारंगी दो तरह की होती है। जोगिया सारंगी तथा धानी सारंगी। जोगिया सारंगी जोगियों द्वारा प्रयोग की जाती है जबकि धानी एवं बड़ी सारंगी का प्रयोग लोक गायन एवं लोक नाटकों में किया जाता है। बांसुरी को लोक जीवन में वंशी, मुरली आदि के नाम से जाना जाता है। इसका प्रयोग संगीत को मधुरता प्रदान करने एवं एकल मनोरंजन के लिए प्रयोग किया जाता है। अलगोजा अत्यन्त प्राचीन वाद्य है। एकल अलगोजा तथा जोड़ी अलगोजा दोनों ही लोक संगीत में प्रयोग किए जाते हैं। शहनाई यह वाद्य विवाह एंव मंगल अवसरों पर बजाया जाता है। शंख उद्घोषणा एवं आरती के समय बजाया जाता है। बीन लोक पारम्परिक वाद्य है जिसको सपेरा जाति के लोग लोक संगीत के साथ बजाते हैं। ताशा नगाड़े से मिलता हुआ वाद्य है। लोक संगीत में इसका प्रयोग किया जाता है। झांज अध्यात्मिक कार्यों एवं पूजा–पद्धतियों में प्रयोग किया जाने वाला लोक वाद्य है। इसके अतिरिक्त ''लोकजीवन में माँदर, तूम्बा, तूम्बड़ी, सींगबाजा, चिकारा, मोहरी, फेफरया, मृदंग, मगज, छाती, ठीसकी, भूगड़ू, धार जाभवा, पवई, ठडका़, दफड़ा, खंजनी, किंदरा, शिवा, घोड़ी, रौदा, बिरला, पहरा, टंगनी, छुटका, रैंकड़ी, हिरकी, केंकरी, मुंचांग, करताल, टूंटड़ी, रमतुला, तुरही, खनखना, नकड़ेवन, लोटा, थाली, शिशी, मांदुरी, डुहकी, धनकुल, पिपनी, पत्ता, माचिस, चटकोला आदि लोक वाद्य लोकजीवन में प्रयोग किए जाते हैं।''[1]

मूल शब्दः सारंगी, धानी–सारंगी, जोगिया–सारंगी, एकतारा, माँदर, तूम्बा, तूम्बड़ी, सींगबाजा, चिकारा, मोहरी, फेफरया, मृदंग, मगज, छाती, ठीसकी, भूगड़ू, धार जाभवा, पवई, ठडका़, दफड़ा, खंजनी, किंदरा, शिवा, घोड़ी, रौदा, बिरला, पहरा, टंगनी, छुटका, रैंकड़ी, हिरकी, केंकरी, मुंचांग, करताल, टूंटड़ी, रमतुला, तुरही, खनखना, नकड़ेवन, लोटा, थाली, शिशी, मांदुरी, डुहकी, धनकुल, पिपनी, पत्ता, माचिस, चटकोला।

(क) हरियाणा के लोक तत् (तंत्री) वाद्य

हरियाणा के लोक तत–वाद्यों में निम्नलिखित वाद्य प्रमुख हैंः

1. सारंगी
2. एकतारा एवं दोतारा
3. बैंजो।

(ख) हरियाणा के लोक अवनद्ध–वाद्य

हरियाणा प्रदेश के लोक अवनद्ध–वाद्यों के वर्ग में निम्नलिखित वाद्य आते हैंः

1. ढोलक
2. ढोल
3. नगाड़ा
4. डमरू
5. डेरू
6. डफ
7. खंजरी
8. घड़वा (घड़ा)
9. ताशा

(ग) हरियाणा के लोक सुषिर–वाद्य

हरियाणा प्रदेश के लोक सुषिर–वाद्यों का भी यहां के संगीत से काफी महत्त्व है, जो इस प्रकार से हैः

1. बीन
2. बांसुरी
3. अलगौजा
4. शहनाई
5. शंख
6. कलॉरनेट
7. हारमोनियम (पेटी)
8. ट्रम्पैट आदि।

(घ) हरियाणा के लोक घन–वाद्य

हरियाणा प्रदेश में अन्य वाद्यों के साथ–साथ घन–वाद्यों का भी काफी महत्त्व है, जो निम्नलिखित हैः

1. खड़ताल (करताल)
2. चिमटा
3. घुंघरू
4. झांझ
5. मंजीरा
6. खंजरी (चर्मरहित)
7. झुनझुना (छैना)

निष्कर्ष

इस प्रकार हरियाणवी लोकसंगीत में होली राग, लोकराग, सांग–संगीत एवं रागनी आदि का काफी महत्त्व है, जिससे हमें हरियाणवी संस्कृति एवं वहां के समाज का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। हरियाणवी लोकगीतों में स्थानीय जीवन की झलक देखने को मिलती है। इन गीतों में जीवन के संस्कारों, पर्वों, धार्मिक–क्रिया–कलापों एवं अनुष्ठानों, ऋतुओं, व्यवसायों, आदि का आभास होता है। इनमें यहां के समाज के व्यवहार, नीतियां एवं जीवन–दर्शन पर प्रकाश डालने वाली सामग्री भी उपलब्ध है। इन गीतों की विशेषता यह है कि इनमें बनावटीपन एवं आडम्बरता देखने को नहीं मिलती तथा इनसे मनुष्य के वास्तविक जीवन का बोध होता है।

संदर्भ

1. योगराज थानी, हरियाणा राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली 6, संस्करण 2002
2. डॉ. रीता धनखड़, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परम्परा, संजय प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2003
3. देवी शंकर प्रभाकर, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन, नई सडक़, दिल्ली–1, संस्करण 1983
4. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 236
5. डॉ. शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृष्ठ संख्या 302
6. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 237
7. डॉ. जय नारायण कौशिक, हरियाणवी हिंदी कोश, प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़ 1985, पृष्ठ संख्या 310
8. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 238
9. डॉ. जय नारायण कौशिक, हरियाणवी हिंदी कोश, प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़ 1985, पृष्ठ संख्या 275
10. डॉ. धमबीर शर्मा, दिल्ली प्रदेश की लोक सांस्कृतिक शब्दावली, राजेश प्रकाशन 1991, पृष्ठ संख्या
11. डॉ. जय नारायण कौशिक, लोक संस्कृति और लोक साहित्य, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, संस्करण 2000
12. रघुवीर सिंह मथाना, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन रोहतक, संस्करण 2004